नेताजी जी से संबंधित तथ्यों से छेड़छाड़ :उन्हें संघी घोषित करने का कुत्सित प्रयास

बीजेपी की विचारधारा इस्लाम और ईसाई धर्म को विदेशी मानती है और इसीलिए इन धर्मों के मानने वालों के खिलाफ नफरत फैलाती है। इसके उलट, गांधी, नेहरु, बोस और अन्य आजादी के दीवाने मानते थे कि धार्मिक विविधता ही हमारी ताकत है। बोस इसी सोच के जीते-जागते उदाहरण हैं।

राम पुनियानी

इस साल 8 सितंबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुभाषचन्द्र बोस के विचारों और उनकी राजनीति को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने का एक और अवसर मिल गया। नेताजी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए मोदी ने कहा कि अगर भारत नेताजी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलता तो देश की कहीं अधिक प्रगति होती। नेताजी को भुला दिया गया था, परन्तु अब (मोदी राज में) उनके विचारों को महत्व दिया जा रहा है। मोदी का दावा है उनकी सरकार के कामकाज पर नेताजी की नीतियों की छाप है।

सबसे पहले हम आर्थिक प्रगति के बारे में नेताजी की सोच पर चर्चा करेंगे। वे समाजवादी थे और नियोजित विकास को देश की समृद्धि का आधार मानते थे। सन 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होने के बाद उन्होंने आर्थिक नीतियों को महत्व देना शुरू किया। उन्होंने जवाहरलाल नेहरु को पत्र लिखकर उनसे राष्ट्रीय योजना समिति का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का अनुरोध किया। उन्होंने लिखा, "मुझे आशा है कि आप राष्ट्रीय समिति की अध्यक्षता स्वीकार करेंगेय् इस समिति की सफलता के लिए आपको ऐसा करना ही चाहिए।" नेहरु ने न केवल अपने इस नजदीकी वैचारिक मित्र के प्रस्ताव को स्वीकार किया वरन इस काम को स्वतंत्र भारत में भी जारी रखा।

नेहरु ने योजना आयोग का गठन किया जिसने देश के विकास को दिशा दी। सन 2014 में सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार द्वारा इस आयोग को समाप्त कर दिया गया। इसका स्थान नीति आयोग ने लिया, जिसके लक्ष्य एकदम भिन्न हैं। जहां तक आर्थिक नियोजन का प्रश्न है, नेहरु ने नेताजी की सोच को आगे बढ़ाया। इसके विपरीत, मोदी ने योजनाबद्ध विकास की अवधारणा को समाप्त कर दिया, जिसका खामियाजा भारत के लोगों को भुगतना पड़ रहा है। बोस और नेहरु की मान्यता थी कि सार्वजनिक क्षेत्र की हमारे देश की आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु इन दिनों सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों और संस्थानों को बेचने का अभियान चल रहा है।

अंग्रेजों के खिलाफ कैसे लड़ा जाए, इस संबंध में बोस और कांग्रेस के नेतृत्व के एक बड़े हिस्से के बीच मतभेद थे। बोस, "दुश्मन का दुश्मन दोस्त" के सिद्धांत के आधार पर जर्मनी और जापान के साथ गठबंधन के हामी थे परन्तु महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के नेताओं का एक बड़ा तबका अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने के पक्ष में था। एक अर्थ में जापान का समर्थन करने का बोस का प्रयास भारत के लिए बड़ी मुसीबत बन सकता था। अगर जर्मनी-जापान द्वितीय विश्वयुद्ध में विजयी होते तो भारत का जापान का गुलाम बनना लगभग सुनिश्चित था।

भारत की समृद्ध सांझी विरासत के अनुरूप, गांधी, जो महानतम हिन्दू थे, सभी धर्मों को बराबर मानते थे। वे सभी धर्मों को भारतीय मानते थे और उनकी नैतिक शिक्षाओं को भारत में भाईचारे की मूल्य की स्थापना की नींव बनाना चाहते थे। नेहरु भी भारत की गंगा-जमुनी तहजीब के झंडाबरदार थे और यही उनकी युगांतकारी रचना "डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया" का मूल सन्देश था। श्याम बेनेगल द्वारा निर्मित टीवी सीरियल "भारत एक खोज" भी यही रेखांकित करता है। बोस भी भारतीय संस्कृति के बहुवाद को सबसे ज्यादा अहमियत देते थे।

अपनी पुस्तक "फ्री इंडिया एंड हर प्रोब्लम्स" में बोस लिखते हैं, "मुसलमानों के आगमन से एक नई सांझा संस्कृति विकसित हुई। यद्यपि उन्होंने हिन्दुओं के धर्म को स्वीकार नहीं किया तथापि उन्होंने भारत को अपना देश बनाया, उसके सामाजिक जीवन में भाग लेना शुरू किया और वे देश की खुशियों और दुखों में भागीदार बने। दोनों समुदायों के बीच सहयोग से नई कला और संस्कृति का विकास हुआ..."। और "भारतीय मुसलमान देश की स्वाधीनता के लिए प्रयासरत है"। अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने एक ऐसे नए राज्य की परिकल्पना की जिसमें "व्यक्तियों और समूहों की धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता की गारंटी होगी" और "राज्य का कोई धर्म नहीं होगा"।

मोदी की विचारधारा इस्लाम और ईसाई धर्म को विदेशी मानती है और इसी आधार पर इन धर्मों के मानने वालों के खिलाफ नफरत फैलाती है। इसके विपरीत, गांधी, नेहरु, बोस और स्वाधीनता संग्राम के अन्य नेता यह मानते थे कि धार्मिक विविधता ही हमारी ताकत है।

बोस इसी सोच के जीते-जागते उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी सेना का नाम आज़ाद हिन्द फौज़ रखा। उन्होंने एक हिन्दुस्तानी शब्द चुना, संस्कृत शब्द नहीं। यह भी महात्मा गांधी की सोच के अनुरूप था। आज़ाद हिन्द फौज़ में रानी झांसी रेजीमेंट थी, जिसकी कमांडर लक्ष्मी सहगल थीं। फौज़ में शाहनवाज खान और ढिल्लों भी थे, जो अलग-अलग धर्मों से थे। यह सब धर्मनिरपेक्षता के प्रति पूर्णत: प्रतिबद्ध बोस द्वारा सोच-समझकर किया गया था। इसी तरह, बोस ने भारत की जिस निर्वासित सरकार का गठन किया उसका नाम हुकूमत आज़ाद ए हिंद था। उनके विश्वसनीय सहयोगियों में मुहम्मद ज़मान कियानी और शौकत अली शामिल थे। कर्नल सायरिल इस्ट्रेसी भी उनके विश्वस्तों में से थे।

बंधुत्व की इन जड़ों को वर्तमान प्रधानमंत्री अनवरत कमजोर कर रहे हैं। सांप्रदायिक एकता को चोट पहुंचाई जा रही है, जिसके नतीजे में लिंचिंग की घटनाएं हो रहीं हैं और मुसलमानों के अलावा ईसाईयों को भी हिंसा का शिकार बनाया जा रहा है। इन दोनों समुदायों के लोगों को दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया गया है।

बोस के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष सबसे महत्वपूर्ण था। देश को आज़ाद करने के तरीके के बारे में कांग्रेस के नेतृत्व से उनके मतभेदों के बावजूद, बोस ने "भारत छोड़ो आन्दोलन" का समर्थन किया और सावरकर और जिन्ना से इसमें भाग लेने का आव्हान किया। यह अलग बात है कि मोदी के वैचारिक पितामहों सावरकर और गोलवलकर ने न केवल भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया बल्कि अंग्रेजों का समर्थन किया और द्वितीय विश्वयुद्ध लड़ने में उनकी मदद की। जब बोस अंग्रेजों से लड़ने के लिए सेना बना रहे थे उस समय मोदी के गुरु सावरकर अंग्रेजों की मदद कर रहे थे।

वीर सावरकर ने न केवल अंग्रेजों की मदद की वरन उन्होंने देश में बंधुत्व को बढ़ावा देने वाली गांधी, नेहरु और बोस की विचारधारा का भी विरोध किया। बोस द्वारा भारत की सांझा संस्कृति की हिमायत को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि दिया जाना चाहिए।

हम एक अजीबोगरीब समय में जी रहे हैं। सत्ताधारी स्वयं की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए ऐसे व्यक्तित्वों का सहारा ले रहे हैं जिनके सिद्धांत और विचार उनकी हरकतों से कतई मेल नहीं खाते। यह कहना कि नेहरु ने बोस की स्मृति को दफनाने का प्रयास किया, सफ़ेद झूठ है। नेहरु ने आज़ाद हिंद फौज़ के सेनानियों का मुकदमा लड़ने के लिए बरसों बाद वकील की भूमिका निभायी। उन्होंने हमारे दूतावास के जरिये बोस की पुत्री की हर संभव मदद की। इससे यह स्पष्ट है कि नेहरु अपने महान मित्र और कामरेड का कितना सम्मान करते थे।

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया द्वारा)

भारतीय मुसलमान : एक कड़वी बहस

असगर वजाहत

भारतीय मुसलमानों पर लिखने से पहले यह साफ कर देना जरूरी है कि जिस तरह कोई एक भारतीय खाना नहीं है,एक भारतीय संगीत नहीं है, एक भाषा नहीं है, एक पहनावा नहीं है उसी तरह मुसलमानों की कोई एक पहचान/ एकरूपता नहीं है। वे एक मूल धर्म के कई सम्प्रदायों को मानते हैं लेकिन उनकी भाषा, पहनावा, खाना पीना एक दूसरे से बहुत अलग है। उनके बहुत से विश्वास भी एक दूसरेसे मेल नहीं खाते। कहीं कहीं वे जातिवाद का भी शिकार हैं। इसलिए जब हम भारतीय मुसलमानों की बात करते हैं तब निश्चित रूप से यह उत्तर भारत, विशेष रुप से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान के मुसलमानों के बारे में ही होता है।

1. भारत के मुसलमानों की एक मूल समस्या उनके अंदर शिक्षा और जागरूकता का अभाव है। इसका मूल कारण उनका अपने छोटे-छोटे धार्मिक गुटों के प्रभाव में रहना ही है। कुछ धार्मिक गुट उन्हें आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा से दूर रखकर केवल मदरसा शिक्षा तक सीमित कर देते हैं।

2. पढ़े लिखे मुस्लिम समुदाय का संबंध अपने धर्म के कमजोर और पिछड़े हुए लोगों से लगभग पूरी तरह कटा हुआ है। मध्यम और उच्च मध्यमवर्गीय मुसलमानों ने अपने लिए 'सुरक्षित स्वर्ग' बना लिए हैं ।

3. मुसलमान चुनाव में मतदान करने और अपने धार्मिक विश्वासों और सीधे सीधे उन्हें प्रभावित करने वाले क़ानूनों के अलावा देश की बड़ी समस्याओं या राष्ट्रीय मुद्दे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देते और न इस संबंध में आयोजित आंदोलनों का सक्रिय हिस्सा बनते हैं। उदाहरण के लिए सरकार की शिक्षा नीति, स्वास्थ्य नीति, लोकतांत्रिक संगठनों का गिरावट आदि।

4. मुस्लिम बुद्धिजीवी जो आमतौर पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जामिया मिलिया इस्लामिया और इसी तरह के दूसरे संस्थानों से संबंधित हैं आमतौर पर अकादमिक कामों के अलावा अपने समाज ही नहीं बल्कि देश की प्रमुख समस्याओं के प्रति उदासीन रहते हैं।

5. धर्म प्रचार और धर्म सुधार के नाम पर मुसलमान करोड़ों रुपए खर्च कर देते हैं लेकिन लोकतंत्र को बचाने के लिए, जो उन्हें धार्मिक काम करने की छूट जाता है, प्राय: कुछ नहीं करते।

6. कुछ मुस्लिम धर्म प्रचारकों ने अनपढ़ या कम पढ़ें मुसलमानों पर धर्म का ऐसा आतंक स्थापित कर दिया है कि वे केवल जमीन के नीचे अर्थात कब्र में क्या होगा और आकाश के ऊपर मतलब स्वर्ग और नरक के अतिरिक्त और किसी चीज़ की चिंता ही नहीं करते। जबकि इस्लाम धर्म दीन और दुनिया मतलब धर्म और संसार दोनों को साथ लेकर चलने के पर बल देता है।

7. पिछले कुछ दशकों से बढ़ती मुस्लिम विरोधी भावनाओं और हिंसा के कारण मुस्लिम समुदाय आतंकित, भयभीत डरा हुआ और अपनी सुरक्षा के प्रति बहुत चिंतित है। उसकी दूसरी प्रतिक्रिया आक्रामकता की है जो निश्चित रूप से उसे और अधिक कमजोर कर देगी।

8. अपनी वर्तमान स्थिति के कारण मुसलमान 'सॉफ्ट टारगेट' बन जाते हैं। उन्हें पूरी तरह खलनायक बना दिया गया है। उन पर हमला करना, उन्हें बदनाम करना, उन्हें अपमानित करना, उनके साथ भेदभाव करना, हिंसा करना, उनके अधिकारों का हनन करना बहुत सरल हो जाता है।

9.अपनी कमज़ोर स्थिति के कारण मुसलमान अपने खिलाफ व्यापक स्तर पर किए जाने वाले घृणा प्रचार, झूठे समाचारों और गलत व्याख्या का जवाब दे पाने में समर्थ नहीं है।

10. भारत का मुसलमान अब तक अपनी राजनीतिक भूमिका को समझ ही नहीं पाया है और यह उसकी समस्याओं का एक बहुत बड़ा कारण है।

11.कांग्रेस और उसके बाद क्षेत्रीय दलों ने मुसलमानों का तुष्टीकरण करके उनकी स्थिति को और खराब बनाया है। कांग्रेस ने मुसलमानों को 'खुश करने' की जिस परंपरा की शुरुआत की थी उसको बाद में मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, मायावती आदि ने चरम पर पहुंचा दिया था। मुसलमानों को बहुत 'खुश कर' दिया था। मुसलमानों के वोट लेकर कई दशकों तक यह नेता सत्ता का मजा लेते रहे। इसी समय उत्तर प्रदेश और बिहार के जिलों में 'मुस्लिम माफिया' का जन्म होता है। मुस्लिम बाहुबली पैदा होते हैं और क्या मुस्लिम धार्मिक नेताओं के संपत्ति में वृद्धि होती है? साधारण मुसलमान यह समझ नहीं पाए कि उनके साथ उपकार किया जा रहा है वह कल उनके लिए आफत बन जाएगा, मुसीबत बन जाएगा। मुसलमानों के प्रति इस तुष्टिकरण की प्रतिक्रिया ने दरअसल उन लोगों की बहुत मदद की है जो मुसलमानों को खलनायक बना कर पेश करते हैं।

12. आज बहुत सफलता, चतुराई, होशियारी और अपार धन-संपत्ति की सहायता से मुसलमानों को इतना बड़ा खलनायक सिद्ध कर दिया गया है कि अब वे नेता जो पहले मुसलमानों की माला जपा करते थे अब मुसलमानो का नाम लेते हुए डरते हैं।

13. आजादी के 70 साल बाद मुसलमान व्यापारियों और कारोबारियों के पास अच्छा पैसा आ गया है लेकिन वे उस पैसे का उपयोग अपनी बिरादरी या देश हित करते नहीं दिखाई देते।

14. आशा है भविष्य में सार्थक परिवर्तन होंगें। देश में विभिन्न समुदायों के बीच एकता भाईचारा स्थापित होगा। लोकतंत्र मजबूत होगा।देश हित और समाज हित में देशवासियों को एक दूसरे से मिलकर काम करने की आवश्यकता है।